अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : "जयप्रकाश कर्दम : व्यक्तित्व एवं कृतित्व" ..... 1 ते 21

1.1 जीवन परिचय

1.1.1 जन्म तिथि एवं जन्म स्थान

1.1.2 माता - पिता

1.1.3 भाई - बहन

1.1.4 बचपन

1.1.5 शिक्षा

1.1.6 नौकरी

1.1.7 विवाह

1.1.8 संतान

1.1.9 रहन-सहन तथा खान-पान

1.2. **व्यक्तित्व के विविध पहलु**

1.2.1 परिवारजनों से प्रभावित

1.2.2 गुरुजनों से प्रभावित

1.2.3 पुस्तकों से प्रभावित

1.2.4 समाज सुधारकों से प्रभावित

1.2.5 अनुशासनप्रिय

1.2.6 मित्रों के चहेता

1.2.7 शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्त्व देनेवाले

1.2.8 मानवीय संबंधों को महत्त्व देनेवाले (बंधुता)

1.2.9 व्यसनमुक्त

1.2.10	संघर्षशील
1.2.11	श्रमसाध्य रचनाकार तथा अध्ययनशील
1.2.12	मानवतावादी मूल्यों के पक्षधर : प्रगतिशील विचारक
1.2.13	प्रामाणिकता ईमानदार
1.2.14	जीवन के प्रति दृष्टिकोण
1.2.15	नास्तिकता
1.2.16	संवेदनशील तथा भावुक
1.2.17	दलितों के प्रति आस्था
1.2.18	दलित साहित्य सृजन प्रेरणा
1.3	**जयप्रकाश कर्दम का साहित्य परिचय : कृतित्व**
1.3.1	उपन्यास
1.3.2	बाल उपन्यास
1.3.3	कहानी संग्रह
1.3.4	कविता संग्रह
1.3.5	विचार प्रबंध / आलोचना
1.3.6	शोध-प्रबंध
1.3.7	संपादित पुस्तकें
1.3.8	बाल साहित्य
1.3.9	आनुवादित पुस्तक
1.3.10	प्रकाशाधीन पुस्तकें
1.3.11	पत्र - पत्रिकाओं से जुड़ाव
1.3.12	अन्य विवरण
1.3.13	फैलोशिप

1.3.14 पुरस्कार

1.3.15 सम्मान

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

द्वितीय अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का कथावस्तुगत अनुशीलन" ... 22 ते 61

विषय प्रवेश :

2.1 कथावस्तु का स्वरूप तथा महत्त्व

2.2 विवेच्य उपन्यासों की कथावस्तु

2.2.1 'करूणा' उपन्यास की कथावस्तु

2.2.1.1 मुख्य कथा

2.2.1.2 गौण कथा

2.2.1.3 सवर्ण - दलित संघर्ष की स्थिति

2.2.1.4 कथावस्तु का समाज जीवन से जुड़ाव

2.2.1.5 उच्चशिक्षित दलितों की पीड़ा

2.2.2 'छप्पर' उपन्यास की कथावस्तु

2.2.2.1 मुख्य कथा

2.2.2.2 गौण कथा

2.2.2.3 सवर्ण - दलित संघर्ष की स्थिति

2.2.2.4 कथावस्तु का समाज जीवन से जुड़ाव

2.2.2.5 उच्चशिक्षित दलितों की पीड़ा

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

तृतीय अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों के पात्र एवं चरित्र-चित्रण का परिचयात्मक अनुशीलन" ..... 62 ते 109

विषय प्रवेश :

3.1 पात्र एवं चरित्र-चित्रण का स्वरूप एवं महत्त्व

3.2 'करूणा' उपन्यास में चित्रित पात्रों का परिचयात्मक अनुशीलन

प्रमुख पात्र :

3.2.1 करूणा

3.2.1.1 उपन्यास की नायिका

3.2.1.2 साहसी युवती

3.2.1.3 प्रेम और त्याग की मूर्ति

3.2.1.4 असफल प्रेमिका

3.2.1.5 भारतीय भिक्षुणी संघ की महामंत्री

3.2.1.6 जिज्ञासु युवती

3.2.1.7 जीवन से समझौता करनेवाली युवती

3.2.1.8 विवेकशील युवती

3.2.1.9 ध्येयवादी युवती

3.2.2 रमेश

3.2.2.1 शिक्षित तथा साहित्य के क्षेत्र में विशेष अभिरूचि

3.2.2.2 संगीत प्रेमी तथा सितार का अच्छा वादक

3.2.2.3 पारिवारिक उत्तरदायित्वों का निष्ठा के साथ पालन करनेवाला जिम्मेदार युवक

3.2.2.4 स्नेहमयी, भावुक तथा वात्सलमयी स्वभाव

3.2.2.5 आर्थिक अभावों से त्रस्त

3.2.2.6 विद्रोही युवक

3.2.2.7 भ्रष्ट राजनीति के नसबंदी षड़यंत्र का शिकार

3.2.2.8 कल्पनाशील युवक

3.2.2.9 त्याग, समर्पणशील युवक

3.2.2.10 जेल कैदियों का नायक

3.2.2.11 आदर्श समाज की स्थापना करने का संकल्प

3.2.2.12 अन्याय, अत्याचार का विरोधी

3.2.2.13 गौतम बुद्ध के विचारों का अनुयायी

गौणपात्र

3.2.3. **सूरज**

3.2.3.1 उद्दण्ड तथा शरारती युवक

3.2.3.2 व्यसनाधीन युवक

3.2.3.3 धूर्त तथा चालाक

3.2.3.4 पिता का हत्यारा

3.2.4 **ठाकुर सुखदेवसिंह**

3.2.5 **आखिल**

3.2.6 **रघुनाथ तिवारी**

3.3 **'छप्पर' उपन्यास में चित्रित पात्रों का परिचयात्मक अनुशीलन**

प्रमुख पात्र

3.3.1 **चंदन**

3.3.1.1 शिक्षित युवक

3.3.1.2 कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदार

3.3.1.3 आत्मविश्वासु

3.3.1.4 नास्तिक तथा मानवतावादी

3.3.1.5 सामाजिक क्रांति का प्रतीक

3.3.1.6 भावुक तथा संवेदनशील युवक

3.3.1.7 विद्रोही युवक

3.3.1.8 स्वाभिमानी युवक

3.3.1.9 समाज के लिए त्याग एवं समर्पण की भावना

3.3.1.10 रूढ़ि परंपराओं का विरोधी

3.3.1.11 समतावादी समाज का पक्षधर तथा अहिंसा का पुजारी

3.3.1.12 माता-पिता की आशा-आकांक्षाओं के प्रति सचेत

3.3.1.13 डॉ.बाबासाहब अम्बेड़कर जी के विचारों का वाहक

3.3.1.14 कठोर परिश्रमी

3.3.1.15 जिज्ञासु

3.3.1.16 स्पष्टवादी

3.3.1.17 मानवीय जीवन में शिक्षा को महत्त्व देनेवाला युवक

गौण पात्र

3.3.2 रजनी

3.3.2.1 प्रभावशाली तथा मन को मोहित करनेवाला व्यक्तित्व

3.3.2.2 मानवतावादी विचारधारा की पक्षधर

3.3.2.3 सामाजिक परिवर्तनवादी विचारधारा की समर्थक

3.3.2.4 समाज सेविका

3.3.2.5 मूक प्रेमिका

3.3.2.6 परोपकार की भावना

3.3.2.7 प्रेरणादायी युवती

3.3.2.8 व्यवस्था के खिलाफ विद्रोही

3.3.2.9 अन्याय-अत्याचार की विरोधी युवती

3.3.2.10 भावुक युवती

3.3.2.11 प्रायश्चित तथा पश्चतापदग्ध

3.3.3 **सुक्खा**

3.3.3.1 समतावादी व्यवस्था का समर्थक

3.3.3.2 स्वाभिमानी

3.3.3.3 आशावादी

3.3.3.4 दृढ़ निश्चयी

3.3.3.5 विद्रोही

3.3.3.6 प्रेरणादायी

3.3.3.7 मानवतावादी विचारधारा का पक्षधर

3.3.4 **रमिया**

3.3.4.1 आदर्श पत्नी के रूप में

3.3.4.2 कल्पनाशील या आशावादी नारी

3.3.4.3 जिज्ञासु

3.3.4.4 त्याग की प्रतिमूर्ति

3.3.5 **कमला**

3.3.5.1 प्रभावशाली व्यक्तित्व

3.3.5.2 प्रेरणादायी

3.3.5.3 त्याग, बलिदान तथा समर्पण की भावना

3.3.5.4 आशावादी नारी

3.3.5.5 मातृवात्सलमयी नारी

3.3.5.6 कुआरी मॉ की यातना

3.3.5.7 सौंदर्य के कारण प्रताड़ित नारी

3.3.5.8 अतिथि सत्कार करनेवाली नारी

3.3.6 **हरिया**

3.3.6.1 सहयोगी

3.3.6.2 प्रेरणादायी

3.3.6.3 विद्रोही

3.3.6.4 सामाजिक दायित्व बोध के प्रति सजग

3.3.6.5 भावुक तथा सहृदयी

3.3.7 **हरनामसिंह**

3.3.7.1 शोषक वृत्ति

3.3.7.2 स्वार्थी प्रवृत्ति

3.3.7.3 सुख-सुविधाओं तथा साधन संपन्नतापूर्ण जीवन के भोक्ता

3.3.7.4 सनातन व्यवस्था के समर्थक

3.3.7.5 पश्चतापदग्ध

3.3.7.6 जीवन की व्यथा तथा पीड़ा

3.3.8 **कणापंड़ित**

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

चतुर्थ अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना" ..... 110 ते 131

विषय प्रवेश :

4.1 संवाद योजना का स्वरूप तथा महत्त्व

4.2 विवेच्य उपन्यासों में संवाद योजना

4.2.1 व्याख्यात्मक संवाद

4.2.2 आवेशात्मक संवाद

4.2.3 नाटकीय संवाद

4.2.4 व्यंग्यात्मक संवाद

4.2.5 गंभीर संवाद

4.2.6 तर्कपूर्ण संवाद

4.2.7 अलंकारिक संवाद

4.2.8 व्यावहारिक संवाद

4.2.9 मार्मिक संवाद

4.2.10 संक्षिप्त संवाद

4.2.11 उद्देश्यपूर्ति में सहायक संवाद

4.2.12 चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करनेवाले संवाद

4.2.13 विवरणात्मक संवाद

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

पंचम अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का परिवेशगत अनुशीलन" ..... 132 ते 156

विषय प्रवेश :

5.1 परिवेश तथा वातावरण से तात्पर्य

5.2 **विवेच्य उपन्यासों का परिवेशगत अनुशीलन**

5.2.1 सामाजिक परिवेश

5.2.2 आर्थिक परिवेश

5.2.3 राजनीतिक परिवेश

5.2.4 धार्मिक परिवेश

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

षष्ठ अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों का भाषिक एवं उद्देश्यगत तथा समस्यागत अनुशीलन" ..... 157 ते 192

विषय प्रवेश :

6.1 **भाषा : स्वरूप एवं महत्त्व**

6.2 **विविध शब्दों का प्रयोग**

6.2.1 तत्सम शब्द

6.2.2 तद्भव शब्द

6.2.3 देशज शब्द

6.2.4 विदेशी शब्द

6.2.5 अरबी शब्द

6.2.6 फारसी शब्द

6.2.7 अंग्रेजी शब्द

6.2.8 संस्कृत शब्द

6.3 **अन्य शब्द**

6.3.1 ध्वन्यार्थक शब्द

6.3.2 निरर्थक शब्द

6.3.3 द्विरूक्त शब्द

6.3.4 संयुक्त शब्द

6.3.5 अप शब्द

6.4 भाषा सौंदर्य के साधन

6.4.1 पात्रानुकूल भाषा

6.4.2 उपदेशात्मक भाषा

6.4.3 आत्मकथात्मक भाषा

6.4.4 आक्रमक तथा क्रांतिकारी भाषा का प्रयोग

6.4.5 दलित जीवन के लिए प्रेरणादायी भाषा

6.4.6 वर्णनात्मक भाषा

6.4.7 मुहावरें

6.4.8 लोकोक्तियाँ

6.4.9 सूक्तियाँ

6.5 उद्देश्य तात्पर्य

6.5.1 विवेच्य उपन्यासों में निहित उद्देश्य

6.6 विवेच्य उपन्यासों में निहित समस्या

6.6.1 व्यसनाधीनता या नशा पान की समस्या

6.6.2 पुलिस शोषण की समस्या

6.6.3 बढ़ती जनसंख्या की समस्या

6.6.4 भूख की समस्या

6.6.5 बाढ़ तथा अकाल की समस्या

6.6.6 मजदूर शोषण की समस्या

6.6.7 सेठ साहुकार जमींदारों दवारा शोषण की समस्या

6.6.8 धार्मिक व्यक्तिद्वारा शोषण

6.6.9 देवी देवता तथा अंधविश्वास की समस्या

6.6.10 नारी शोषण की समस्या

6.7 **दलित विद्रोह की समस्या**

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

सप्तम अध्याय : "विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना" ..... 193 ते 222

विषय प्रवेश :

7.1 **'दलित' शब्द से तात्पर्य**

7.2 **चेतना शब्द की व्युत्पत्ति**

7.2.1 'चेतना' शब्द का अर्थ

7.2.2 'चेतना' की परिभाषाएँ

7.2.3 'चेतना' निर्मिती के कारण तथा स्वरूप एवं महत्त्व

7.3 **विवेच्य उपन्यासों में चित्रित दलित चेतना**

7.3.1 आर्थिक चेतना

7.3.2 नारी चेतना

7.3.3 शिक्षा चेतना

7.3.4 धार्मिक चेतना

7.3.5 धार्मिक पाखंडता के खिलाफ चेतना

7.3.6 सम्मानीत तथा स्वाभिमानी जिंदगी जीने की चेतना

7.3.7 राजनीतिक चेतना

7.3.8 समाजकार्य से उत्पन्न चेतना

7.3.9 धर्मपरिवर्तन की चेतना

निष्कर्ष

संदर्भ संकेत

उपसंहार ..... 223 ते 236

परिशिष्ट ..... 237 ते 259

संदर्भ ग्रंथ सूची ..... 260 ते 264